इकाई 35 चीन की क्रांति

इकाई की रूपरेखा

35.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के उपरान्त आपः

- चीन में द्वितीय विश्व युद्ध के उपरान्त क्रियाशील राजनीतिक शक्तियों के बारे में जान सकेंगे,
- चीन के गृह युद्ध के बारे में जान सकेंगे,
- क्योमिंनटांग की पराजय के कारणों को जान सकेंगे,
- साम्यवादी शासन के सम्मुख उत्पन्न कठिनाइयों से परिचित हो सकेंगे,
- नई सत्ता द्वारा अपनाए गए आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक ढाँचे को समझ सकेंगे, और
- चीन की क्रांति के महत्व का मूल्यांकन कर सकेंगे।

35.1 प्रस्तावना

यह इकाई 1945 से 1949 के मध्य के घटनाक्रम का वर्णन करती है। यानी जापान द्वारा आत्मसमर्पण से लेकर उस समय तक जबकि चीन में जन गणतंत्र की स्थापना की गई। ये ऐसे चार वर्ष थे जिस दौरान क्योमिंनटांग और साम्यवादी सेनाओं के मध्य जमकर युद्ध हुआ। यह गृह युद्ध साम्यवादियों की विजय के साथ समाप्त हुआ। इस प्रकार चीन में जनतंत्र पर आधारित एक नवीन शासन की स्थापना हुई। इस घटनाक्रम के विभिन्न पहलुओं पर विचार करते हुए यह इकाई नई सत्ता के सम्मुख उत्पन्न समस्याओं का भी जिक्र करती है। इसके साथ-साथ नई सत्ता द्वारा अपनाए गए आर्थिक, राजनीतिक व सामाजिक ढांचों की भी चर्चा की गई है।

35.2 कुछ टिप्पणियां

चार वर्षों से कम की अवधि में नानकिंग में स्थित क्योमिंनटांग सरकार का धीरे-धीरे परंतु पूर्ण पतन हो गया। उसकी पराजय का कारण मात्र लड़ाइयों में हार या विश्व युद्ध के उपरांत चीन की अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन में उसका सक्षम न होना ही नहीं था। वास्तव में क्योमिंनटांग की इस राष्ट्रवादी सरकार ने किसी भी प्रकार के राजनीतिक या सामाजिक परिवर्तनों को प्रारंभ करने या अपनाने से स्पष्ट इन्कार कर दिया था। इसके विपरीत साम्यवादियों द्वारा मुक्त कराए गए क्षेत्रों में चीनी जनता ने एक नए जीवन का आभास क्यांगसी व येनान के काल में किया था। अब चीनी जनता पुनः क्योमिंनटांग के प्रतिक्रियावादी शासन के अधीन लौटने को तैयार नहीं थी। इस प्रकार जनता की इच्छाओं को पूर्ण करने की असमर्थता भी क्योमिंनटांग की पराजय का उतना ही बड़ा कारण था जितना कि सैनिक मुठभेड़ों में उसकी हार। लेनिन ने एक बार यह संकेत किया था कि:

> ''इतिहास में महान परिवर्तन तभी होते हैं जबकि बड़ी संख्या में लोग पुराने तौर-तरीके से जीने की इच्छा नहीं रखते और जब लोगों का एक ऐसा भाग जिसका पुराने तौर-तरीके में स्वार्थ है परंतु वह उन्हें बनाए रखने में असमर्थ होता है।''

चीन में वास्तव में 1945-49 के दौरान एक ऐसा ही ऐतिहासिक मोड़ देखने को मिलता है।

जापान की पराजय और चीन के राष्ट्रवाद की विजय के उपरान्त जो गृह युद्ध चीन में छिड़ा वह मात्र इस बात का फैसला करने के लिए नहीं था कि चीन में भावी शासक कौन होंगे। वस्तुतः इससे चीन के करोड़ों लोगों के भविष्य का निर्णय होना था। यानि कि उनकी राजनीतिक व सामाजिक स्थिति या प्रतिदिन का जीवन किस प्रकार का होगा। अतः हमारे लिए यहाँ केवल यही जानना महत्वपूर्ण नहीं है कि क्योमिंनटांग की हार क्यों हुई वरन् उतना ही महत्वपूर्ण यह जानना है कि साम्यवादी क्यों और कैसे जीते। संक्षेप में, हमें यही नहीं देखना चाहिए कि चीन के लोग किसके विरुद्ध लड़े वरन् यह भी कि वे किस बात के लिए लड़े। वास्तव में साम्यवादियों ने जो सकारात्मक विकल्प प्रस्तुत किया था वह एक ऐसे समाज की रूपरेखा थी जिसमें एक प्रजातंत्र और सामाजिक न्याय के लिए स्थान था। यह चीन के लोगों के लिए एक नई बात थी या जिसका कुछ-कुछ अनुभव उन्हें साम्यवादियों द्वारा ''मुक्त क्षेत्रों'' में छोटी अवधि तक चलाई गई व्यवस्था में हो चुका था।

यहाँ पर यह समझना भी महत्वपूर्ण है कि साम्यवादियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर जो युद्ध चीन के लोग कर रहे थे, वह वास्तव में उनकी अपनी लड़ाई थी। यह केवल एक गृह युद्ध था, सैनिक मुठभेड़ न होकर एक क्रांतिकारी दौर था। इस दौरे में हिस्सा लेकर चीन की जनता न केवल अपने में बदलाव ला रही थी बल्कि संपूर्ण चीन के समाज को बदल रही थी। चीन की क्रांति को समझने के लिए आगे के खंडों में हम इन सामाजिक प्रक्रियाओं की चर्चा करेंगे।

क्रांति का अर्थ केवल सरकार के बदलने से ही नहीं है। क्रांति के अंतर्गत विद्यमान सामाजिक ढांचे की स्थापना शामिल है। अतः चीन में जो सामाजिक और राजनीतिक शक्तियों के संबंधों में बदलाव आया उनकी दृष्टि से क्रांतिकारी प्रक्रिया का अध्ययन करना महत्वपूर्ण हो जाता है। इसी प्रकार जन प्रजातंत्र की स्थापना के लिए जो आंदोलन हुआ उसको भी समझ लेना आवश्यक है।

1949 की चीन क्रांति ठीक उस प्रकार की सामाजिक क्रांति नहीं थी जो कि 1917 में रूस में हुई थी। स्वयं चीनी साम्यवादियों ने 1949 की विजय को जिन आयामों से देखा वे थे:

- कि यह सम्पूर्ण राष्ट्रीय आन्दोलन का परिणाम थी,
- कि यह किसान संघर्षों की जीत थी, और
- इसके द्वारा एक ऐसे राष्ट्र की एकता पुनःस्थापित हुई थी जो कि अनेक वर्षों से परस्पर विरोधी शक्तियों द्वारा बाँट दिया गया था। साम्यवादियों ने इसे एक ऐसी जनतांत्रिक क्रांति बताया जिसके द्वारा साम्यवादी, जो कि समाजवाद स्थापित करना चाहते थे, सत्ता में आए।

1 अक्तूबर 1949 को चीन के साम्यवादी दल के चेयरमैन माओ त्सु-तुंग ने चीन के जनवादी गणतंत्र की स्थापना की घोषणा की थी। परंतु लाल (साम्यवादी) सेना की वास्तविक विजय का तिथीकरण इतना आसान

नहीं है। उत्तरी चीन के कई क्षेत्र तो 1936 में ही मुक्त करा लिए गए थे परंतु दक्षिण के कई क्षेत्र तो 1950 तक जाकर ही मुक्त कराए गए। अतः 1949 की विजय वास्तव में 1945 से 1951 तक के काल की प्रतीक है जिस दौरान जनवादी सरकार ने धीरे-धीरे संपूर्ण चीन में अपना नियंत्रण स्थापित किया। परंतु 1 अक्तूबर 1949 के दिन की प्रतीकात्मक महत्ता है। इस दिन चीन की जनता ने अपने भाग्य का निर्णय करने की सत्ता अपने हाथ में ली। एक के बाद एक तीव्रता से ऐसे कानून लागू किए गए जिन्होंने परम्परागत शोषक नीतियों को समाप्त कर दिया। प्रत्येक व्यक्ति के लिए ये स्वतंत्रता के पैगाम थे जबकि पहली व्यवस्था में सबने कष्ट भोगे थे। ये कानून और संविधान चीन में नई सरकार और संगठन के आधार बने।

35.3 युद्धोपरांत स्थिति और राजनीतिक शक्तियाँ

दूसरे विश्व युद्ध के नतीजे साम्राज्यवादी शक्तियों के लिए निराशाजनक थे। यद्यपि इटली, जर्मनी और जापान की हार हुई थी परंतु अब ब्रिटेन, फ्रांस और अमरीका जैसी विजेता शक्तियां भी उपनिवेशों में अपने विशेषाधिकारों को बनाए रखने में समर्थ नहीं थीं। वास्तव में रूस की विजय, पूर्वी यूरोप में जनवादी सरकारों की स्थापना और सशक्त राष्ट्रीय आंदोलनों ने एशिया में उपनिवेशवाद को समाप्त करने की प्रक्रिया का आधार बना दिया था। चीन से न केवल जापान बल्कि यूरोपीय शक्तियों को भी पीछे हटना पड़ा था। वास्तव में विश्व युद्ध की समाप्ति पर एक सशक्त साम्यवादी गुट के उभरने से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक संतुलन परिवर्तित हुआ। समाजवाद व राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन बल पकड़ रहे थे। अतः युद्धोपरांत अंतर्राष्ट्रीय स्थिति इस हद तक चीन की जनता के पक्ष में थी कि वह विदेशी ताकतों और उन चीनी शक्तियों को जो कि विदेशियों से साठगांठ करती थी, चुनौती दे, संघर्ष कर सके। यद्यपि जापानी आत्मसमर्पण के बाद चीन में आंतरिक शक्ति संतुलन क्योमिंनटांग के पक्ष में दिखाई पड़ रहा था परंतु इसके बावजूद अंतर्राष्ट्रीय वातावरण में चीनी साम्यवादियों के लिए फायदे की स्थिति थी। जापान विरोधी संघर्ष के दौरान उन क्षेत्रों का जो कि मुक्त लाल क्षेत्र समझे जाते थे, विस्तार हुआ था। परंतु 1945 के अंत तक चीन की अधिकांश भूमि पर क्योमिंनटांग का ही नियंत्रण था। सभी अंतर्राष्ट्रीय शक्तियों ने क्योमिंनटांग को ही मान्यता दी थी। चीन के साम्यवादियों को विश्व शक्तियों के मध्य अभी इस बात की मान्यता हासिल करनी थी कि उन्हें चीन की जनता में व्यापक समर्थन हासिल है। साम्यवादियों के मुकाबले क्योमिंनटांग अभी भी निम्न कारणों से आगे था :

- उसके पास व्यापक वित्तीय साधन थे,
- उसके पास अधिक सैन्य सामग्री थी,
- प्रशासन, आवागमन के साधनों और अखबारों पर उसका नियंत्रण था और इसके साथ-साथ उसे चीनी समाज के प्रभुत्वशाली वर्गों का सहयोग भी प्राप्त था।

उस समय के कुछ युद्ध पत्रकारों की रिपोर्ट से ऐसा स्पष्ट रूप से पता चलता है कि इस सबके बावजूद भी क्योमिंनटांग साम्यवादियों का सफाया नहीं कर पाया। वास्तव में स्थिति फरवरी 1917 के रूस से कुछ मिलती-जुलती थी। वहाँ पर उस काल में दोहरी सत्ता मौजूद थी। एक उन लोगों की जिनके हाथों में सत्ता की बागडोर थी और दूसरे वे लोग जिनकी ताकत जनप्रिय सहयोग पर आधारित थी। क्यांगसी और येनान काल में जो भूमि नीति अपनाई गई थी और जो प्रजातांत्रिक प्रयोग मुक्त क्षेत्रों में किए गए थे उनसे समाज में चीन के साम्यवादियों का लोकप्रिय आधार बना था। इसके द्वारा एक ऐसा समर्थन बना था जिससे राजनीतिक सत्ता की लड़ाई के परिणाम को पहले से नहीं बताया जा सकता था। जबकि क्योमिंनटांग के पास 1945 में बेजोड़ श्रेष्ठता मौजूद थी।

ऐसा नहीं था कि चीन के किसानों को मुक्त क्षेत्रों में सोवियत शासन प्रणाली से शिकायतें नहीं थीं या वे उसके आलोचक नहीं थे, या शहरों में निवासी समाजवादी भविष्य को पसन्द करते थे। परंतु इसमें कोई दो राय नहीं कि वे साम्यवादियों के साथ अपने अनुभव को क्योमिंनटांग के साथ हुए अनुभवों से अधिक पसंद कर रहे थे। किसान विशेषतौर से क्यांगसी और येनान सोवियतों की व्याख्या "अपनी सरकार" कह कर करते थे और उन्हें पुराने दिनों के अनुभव से अच्छा मानते थे। वास्तव में साम्यवादियों के

का एक प्रमुख कारण यह भी था कि "मुक्त क्षेत्रों" में पुलिस का कार्य किसान संगठनों द्वारा किया जाता था और स्थानीय स्वरक्षा में गाँव के किसान, दस्तकार और क्रांतिकारी शामिल थे।

दूसरी तरफ क्योमिंनटांग नियंत्रित क्षेत्रों में जन उत्साह न के बराबर था और सर्वत्र निराशा का माहौल था। सरकारी और सैनिक तंत्र में ऊपर से लेकर नीचे तक भ्रष्टाचार फैला था। इसके अतिरिक्त दूर-दराज के क्षेत्रों में केंद्रीय सरकार की पकड़ ढीली होती जा रही थी सरकार को अपनी अफसरशाही और सेना के लिए भोजन एकत्र करने में भी कठिनाई हो रही थी। किसानों में जबरन भर्ती, करों और कई अन्य लादी जाने वाली ज्यादतियों को लेकर रोष बढ़ रहा था। वेतन भोगी लोग मूल्य वृद्धि को लेकर आर्थिक संकट में थे और बुद्धिजीवी भी असंतुष्ट थे। अत्याधिक राजनीतिक नियंत्रण और दमन के कारण बुद्धिजीवी तेजस्विता और नेतृत्व में भी कमी आई थी।

वास्तव में साम्यवादी और क्योमिंनटांग के नियंत्रण वाले क्षेत्रों में जो परस्पर विरोधाभासी स्थिति मौजूद थी उसने उस सामाजिक वातावरण और पृष्ठभूमि को जन्म दिया जिसके अंतर्गत साम्यवादियों और क्योमिंनटांग के मध्य संघर्ष लड़ा गया। जापान की पराजय से यद्यपि राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम सफल रहा था परंतु अब इसने चीन में विद्यमान आंतरिक विरोधाभासों के संघर्ष का रूप ले लिया। यानि कि चीन और जापान के मध्य के विरोधाभास ने अब एक ऐसे विरोधाभास का रूप लिया जिसमें चीन की जनता का प्रतिनिधित्व साम्यवादी दल के हाथ में था और जमींदारों और बड़े बूर्जुआ वर्ग का नेतृत्व क्योमिंनटांग ने सम्भाल रखा था। अमरीका इस समय क्योमिंनटांग की मदद कर रहा था। जापानियों पर विजय के बाद अब चीन की जनता ने अपना मुख्य लक्ष्य आंतरिक शोषकों से मुक्ति पाना बनाया। इस प्रकार चीन के सामाजिक और राजनीतिक जीवन में वर्ग संघर्ष मुख्य विरोध का रूप लेकर आंतरिक स्थिति पर छाया रहा। राजनीति के क्षेत्र में प्रजातंत्र और सामाजिक मुक्ति मुख्य मुद्दे बने। गृह युद्ध के विस्तार के साथ-साथ यह स्पष्ट हो गया कि इन मुद्दों की पूर्ति में सबसे बड़ी बाधा क्योमिंनटांग है। अतः संघर्ष में जनता की हिस्सेदारी भी बढ़ती गई। इस संघर्ष में नियंत्रण के क्षेत्रों का आकार इतना महत्वपूर्ण नहीं था जितना कि नियंत्रित क्षेत्रों में जीवन का तरीका। और राजनीतिक शक्तियों के संबंधों में हो रहे परिवर्तनों में साम्यवादियों के पक्ष में यही बात निर्णायक बनी।

बोध प्रश्न 1

1) द्वितीय विश्व युद्ध के बाद चीन में राजनीतिक ताकतों की स्थिति की चर्चा 15 पंक्तियों में कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) निम्नलिखित में से कौन से वक्तव्य सही या गलत हैं? (√) या (×) का निशान लगाइए।

i) मुक्त क्षेत्रों के किसान पुराने समय की स्थिति में लौटना चाहते थे।

ii) क्रांति में केवल सरकार में ही बदलाव आता है।

iii) 1945-49 के दौरान क्योमिंनटांग के पास साम्यवादियों के मुकाबले अधिक साधन थे।

iv) चीन के गृह युद्ध में अमरीका क्योमिंनटांग का समर्थन कर रहा था।

35.4 गृह युद्ध का प्रारम्भ

चीन में जापान के आत्मसमर्पण के बाद सैन्य सामग्री, सम्पत्ति और क्षेत्र आदि पर अधिकार स्थापित करने के लिए छीना-झपटी प्रारंभ हो गई। चीनी सेना के अध्यक्ष ने चीन में जापानी कमांडर को यह आदेश भेजा कि वह अपने 1,090,000 सैनिकों और सैन्य सामग्री को युद्ध क्षेत्रों के केवल चीनी कमांडरों के सम्मुख ही समर्पित करे। यद्यपि साम्यवादी जापान के विरुद्ध संघर्ष में बराबर के हिस्सेदार थे। चीनी सेना के सभी कमांडर क्योमिंनटांग के अधिकारी थे।

इस प्रकार इस आदेश के परिणामस्वरूप साम्यवादी जापानी सैन्य टुकड़ियों का समर्पण लेने से वंचित कर दिए गए। इसी समय च्यांग काई शेक ने साम्यवादी सेना की टुकड़ियों को तार द्वारा अपने स्थानों पर रहने का आदेश दिया और उन्हें जापानी शस्त्रों को जब्त करने से भी मना कर दिया।

साम्यवादी यह समझ गए कि क्योमिंनटांग इस नीति के द्वारा चीन में एकमात्र राजनीतिक शक्ति बनना चाहता है। अतः माओ-त्सु-तुंग ने तुरंत लाल सेना की टुकड़ियों को अंदरूनी मंगोलिया, मंचूरिया और उत्तरी व दक्षिण शैंशी की ओर कूच के आदेश दिए। उन्हें दुश्मन की सेनाओं पर हमला करने और उनका आत्मसमर्पण लेने को तैयार रहने के लिए भी कहा गया। चू-तेह के नेतृत्व में लाल सेना ने ऐसा ही किया। क्योमिंनटांग सरकार ने इस पर साम्यवादियों को जनता का शत्रु बताया। इसके जवाब में माओ ने क्योमिंनटांग पर यह आरोप लगाया कि उसने चीन की जनता के विरुद्ध युद्ध छेड़ा है।

तत्काल युद्ध मंचूरिया को लेकर हुआ परंतु साम्यवादी वहाँ अपना प्रभुत्व स्थापित करने में कामयाब रहे। ऐसा तब हुआ जबकि लाल सेना में1 लाख से भी कम सैनिक थे जबकि क्योमिंनटांग की सेना में 3 लाख से अधिक सैनिक थे। अमरीका की यह धारणा थी कि चीन में गृह युद्ध उसके स्वार्थों के विरुद्ध जाएगा अतः उसने दोनों के मध्य मध्यस्थता का प्रयास किया। राष्ट्रपति ट्रूमैन ने शांति स्थापना के लिए अपने विशेष दूत जनरल जोर्ज सी मार्शल को भेजा। च्यांग काई शेक मंचूरिया पर पूर्ण नियंत्रण से कम पर सुलह के लिए तैयार नहीं था जबकि वहाँ साम्यवादियों का कब्जा था। यह स्वाभाविक ही था कि साम्यवादियों ने इसे नहीं माना। 1946 आते-आते समझौते की समस्त संभावनाएं समाप्त हो गईं और गृह युद्ध पूरे जोर शोर से प्रारंभ हो गया।

इस बीच मुद्रास्फीति और बढ़ती हुई कीमतों के कारण क्योमिंनटांग क्षेत्रों में ही गृह युद्ध की स्थिति उत्पन्न हो गई। जबकि "मुक्त क्षेत्रों" में साम्यवादियों ने गद्दारों के विरुद्ध अभियान छेड़ा। उदाहरण के लिए ज़िन जमींदारों ने जापानी सेनाओं का साथ दिया था, गाँव की सभाओं में उनकी भर्त्सना की गई। 1946 में पहले से ही जारी किए गए एक निर्देश के आधार पर लगान और ब्याज की दर में कमी करने के लिए एक जन आंदोलन चलाया गया। इसके साथ-साथ गरीब व मध्यम श्रेणी के किसानों के ऋण माफ कर दिए गए। मई 1946 में, "भूमि जोतने वाले की" का नारा लोकप्रिय हुआ। जमींदारों पर भारी कर लगाए गए। इस प्रकार क्योमिंनटांग व मुक्त क्षेत्रों में हो रहे घटनाक्रम के कारण वर्ग संघर्ष (कृषि क्रांति के द्वारा) गृह युद्ध का एक प्रमुख मुद्दा, समझौता वार्ता के विफल होने से पहले ही बन चुका था। यद्यपि चीन की जनता युद्ध से परेशान थी तथापि इस मुद्दे को लेकर वह एक बार फिर युद्ध को तैयार थी। वास्तव में इस बार का युद्ध उनके अपने अधिकारों और जीविका की रक्षा को लेकर था।

35.5 क्योमिंनटांग के आक्रमण और उसकी पराजयः 1946-47

जून 1946 में क्योमिंनटांग ने दो लाख सैनिकों की सहायता से उत्तरी व मध्य चीन के बड़े साम्यवादी अड्डों पर हमले किए। इसके कारण साम्यवादियों को मध्य मैदानों और यांगसी क्षेत्र से पीछे हटना पड़ा। मार्च 1947 तक येनान जो कि लौंग मार्च के बाद सबसे बड़ा साम्यवादी अड्डा था, क्योमिंनटांग के कब्जे में आ गया।

परंतु क्योमिंनटांग की यह विजय भ्रामक थी। साम्यवादी अभी अपनी ताकत को एकजुट कर रहे थे और सीधे टकराव से बच रहे थे। इसीलिए उन्होंने आक्रामक रवैया नहीं अपनाया। न ही अभी उन्होंने अपने क्षेत्रों को बचाने का प्रयास किया। वास्तव में उन्होंने गुरिल्ला युद्ध की नीति अपनाई जिसमें यकायक आक्रमण कर पुनः सुरक्षा की स्थिति में आ जाना शामिल था। इस प्रकार की नीति के कारण उन्हें बहुत कम नुकसान उठाना पड़ा। दूसरी तरफ क्योमिंनटांग को अपनी सेना का एक बड़ा भाग साम्यवादियों से जीते गए क्षेत्रों की सुरक्षा के लिए रखना पड़ा। उनके सामने कोई और रास्ता भी नहीं था क्योंकि इन क्षेत्रों की जनता साम्यवादियों की एक नवीन जीवन देने की नीति के कारण उनके पक्ष में थी और क्योमिंनटांग की विरोधी थी। इस प्रकार साम्यवादी अपनी सुविधा और साधनों के अनुसार अपनी मनमर्जी का रणक्षेत्र चुनते थे और अपनी समस्त शक्ति से उन क्षेत्रों में आक्रमण करते थे जहाँ क्योमिंनटांग की स्थिति कमजोर थी।

1947 के बसंत में पीपुल्स लिबरेशन आर्मी ने लिन-पिआओ के नेतृत्व में लगातार ऐसे आक्रमण किए कि शहरों में केंद्रित क्योमिंनटांग की सेनाएं हैरान हो उलझन में पड़ गईं। शहरों को छोड़ समस्त मंचूरिया को साम्यवादियों ने जीत लिया। फरवरी 1947 में साम्यवादी दल की केंद्रित समिति ने क्योमिंनटांग की राष्ट्रवादी सरकार को उखाड़ फेंकने का नारा दिया। 1947 के अंत तक साम्यवादी हिंबई, शानटूँग और शान्शी क्षेत्रों में पुनः अपना नियंत्रण करने में सफल रहे। उन्होंने फरवरी 1947 तक 56, मई में 90 और सितम्बर में 97 क्योमिंनटांग की सैन्य टुकड़ियों को हराया। इस प्रकार क्योमिंनटांग की लगभग एक चौथाई सेना पराजित हो गई।

क्योमिंनटांग को इस समय सैनिक कठिनाइयों के साथ-साथ अपने अधीनस्थ क्षेत्रों में अमरीका से सांठ-गाँठ के परिणामस्वरूप आर्थिक संकट का भी सामना करना पड़ा। जापान ने आत्मसमर्पण के उपरान्त समस्त औद्योगिक सामग्री, बैंक व्यवस्था और वित्तीय संस्थाएं साम्यवादियों को न सौंपकर क्योमिंनटांग के हाथों में दी थी। इस सब संपत्ति का मूल्य लगभग 1800 लाख अमरीकी डॉलर था और इस पर बड़े पूंजीपतियों के छोटे से गुट का नियंत्रण था। वास्तव में चीन के चार बड़े पूंजीपति परिवार 70 से 80 प्रतिशत औद्योगिक पूंजी के मालिक थे। जापानियों ने चीनी जनता की जो भूमि और अन्य सम्पति जब्त की थी उस पर भी अब क्योमिंनटांग का अधिकार था। इन चार बड़े परिवारों और उनके सहयोगियों ने, जो कि क्योमिंनटांग को नियंत्रित करते थे, एक स्वतंत्र अर्थव्यवस्था का निर्माण करने के स्थान पर राष्ट्रवादी सरकार को साम्यवादियों के विरूद्ध अमरीकी सहायता के बदले में चीन की अर्थव्यवस्था को अमरीकियों को गिरवी रखने को बाध्य किया। अमरीकियों को साम्यवाद विरोधी ताकत को सहयोग देने में कोई एतराज न था। इसके अतिरिक्त उन्हें सोवियत रूस के विरूद्ध एक अड्डा भी मिल जाता।

नवम्बर 1946 में गृह युद्ध के दौरान ही क्योमिंनटांग ने चीन-अमरीका वाणिज्य और जहाजरानी संधि पर हस्ताक्षर कर चीन के बाजार अमरीकी उत्पादों के लिए खोल दिए थे। इस प्रकार चीन के विदेश व्यापार में अमरीका को एक निर्णायक स्थान मिल गया था। उदाहरण के लिए चीन के 51 प्रतिशत आयात और 57 प्रतिशत निर्यात पर अमरीकी नियंत्रण था। जबकि 1936 में ये आँकड़े 22 और 19 प्रतिशत ही थे। कई उद्यमों में प्रबंध और प्रशिक्षण का कार्य अमरीकी नियंत्रण में रख दिया गया। अमरीकियों ने कई कारखाने भी लगाए और अनेक सुविधाएं या तो प्राप्त की या उन्हें दे दी गईं।क्योमिंनटांग के प्रशासन का पूर्ण लाभ उठाते हुए अमरीकियों ने करों से अपने को बचाया, कच्चे माल पर एकाधिकार स्थापित किया और बाजार व यातायात सुविधाओं पर अपना नियंत्रण स्थापित किया।

इस सबका अर्थ था चीनी अर्थव्यवस्था का अमरीकी पूंजी द्वारा उपनिवेशीकरण। इस से चीन के राष्ट्रीय उद्योगों और वाणिज्य का विकास पूर्णतया रुक गया। परंतु यह स्थिति चीन के बुर्जुवा वर्ग और उद्यमियों के एक बड़े वर्ग के हितों के विरूद्ध थी। और गृह युद्ध की स्थिति में इसका नतीजा यह निकला कि व्यापारिक

और औद्योगिक बुर्जुवा वर्ग की एक बड़ी संख्या साम्यवादियों के साथ सहयोग करने को तैयार थी। अर्थात् अब साम्यवादियों के पक्ष में सामाजिक ताकतों का पुनः मिलन संभव था।

मूल्यों में असीमित वृद्धि ने क्योमिंनटांग क्षेत्रों में भयंकर सामाजिक व आर्थिक संकट उत्पन्न किया। मूल्य सूचकांक जो 1937 में 100 था 1947 में बढ़कर 210 हो गया। अंतः चीनी जनता निराशाजनक स्थिति में किसी भी प्रकार का परिवर्तन स्वीकार करने को तैयार थी। उसने यह भी महसूस किया कि जापानियों को देश से बाहर खदेड़ने के लिए जो कुर्बानियां दी गई थीं क्योमिंनटांग देश को फिर से एक विदेशी सत्ता (अमरीका) के हाथों में बेचकर उन्हें बेकार बना रहा था। विदेशी शासन से जो स्वतंत्रता उन्होंने हासिल की थी उसका धीरे-धीरे हनन हो रहा था। ऐसी स्थिति में जनता को केवल साम्यवादी ही संघर्षरत दिखाई दिए।

क्योमिंनटांग के विरुद्ध उसके स्वयं नियंत्रित क्षेत्रों में और उनके बाहर समाज के लगभग सभी तबकों में असंतोष फैल रहा था। कभी-कभी इसका नेतृत्व भूमिगत साम्यवादी कर रहे थे। परंतु अक्सर यह अपने आप ही क्योमिंनटांग की नीतियों के कारण उभरता रहा। सितम्बर 1946 से कम्युनिस्ट इंटरनेशनल का नारा "चीन छोड़ो" लोकप्रिय हो उठा था। शीघ्र ही एक ऐसा जन आंदोलन उठ खड़ा हुआ जिसके समर्थकों ने यह स्पष्ट कर दिया कि वे तब तक आंदोलन जारी रखेंगे जब तक कि अम[illegible]िक चीन नहीं छोड़ जाते। अलग-अलग इलाकों में इस आंदोलन ने अलग-अलग रूप लिए। उदाहरण के लिए, एक दिसम्बर 1947 के दिन शंघाई में छोटे-छोटे स्टॉल (दुकान) लगाने वालों ने संघर्ष छेड़ा। कारण कुछ यूँ था कि शंघाई में लोग अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ सड़क के किनारे लगे छोटे स्टॉलों से लेते थे और वहाँ अनेक स्टॉल वाले दुकानदार थे। क्योमिंनटांग सरकार ने अपने बड़े व्यापारी समर्थकों का बाजार पर एकाधिकार स्थापित कराने की दृष्टि से सड़क किनारे की छोटी दुकानों को बन्द करने के आदेश दिए। इससे इन छोटे दुकानदारों के लिए रोजी-रोटी की समस्या खड़ी हो गई। जब उन्होंने इस आदेश का विरोध किया तो उन्हें क्रूरतापूर्वक दबाया गया। क्योंकि शंघाई क्योमिंनटांग और अमरीकी गठबंधन का प्रमुख केंद्र था इस घटना के विरूद्ध समस्त चीन में रोष फैला। एक अन्य हादसे में पीकिंग विश्वविद्यालय की एक छात्रा का अमरीकी सैनिक द्वारा बलात्कार किया गया। इसके विरोध में सारे चीन में 5 लाख से अधिक युवाओं ने स्कूलों व विश्वविद्यालयों में हड़ताल की और प्रदर्शन भी किए।

मई 1947 में एक "नवीन चार मई आंदोलन" के प्रारंभ करने की घोषणा की गई। इसका उद्देश्य क्योमिंनटांग की समस्त नीतियों का विरोध करना था। आंदोलन का कठोरता से दमन किया गया। सैकड़ों युवा घायल हुए और दो महीने में 13000 से अधिक गिरफ्तार किए गए। परंतु इस दमन से देशभक्त प्रजातांत्रिक आंदोलन को बढ़ावा ही मिला। शीघ्र ही यह आंदोलन नागरिक अधिकारों की रक्षा के आंदोलन के रूप में आगे बढ़ा।

एक लम्बी अवधि की निष्क्रियता के बाद श्रमिक आंदोलन भी फिर से उभरने लगा। मई 1947 में शंघाई के श्रमिकों ने भूख और महगांई के विरुद्ध हड़तालें की। यांगसी के निचले क्षेत्रों में "चावल दंगे" (Rice riots) भड़क उठे। नतीजन परिवर्तन विरोधी पुरातनपंथियों के विरूद्ध एक बार फिर शहरों में भी संघर्ष छिड़ गया।

गांवों में, क्योमिंनटांग के क्षेत्रों में किसान आंदोलन ने तीव्रता पकड़ी। दंगों और प्रदर्शनों के साथ किसानों ने कर और लगाव देने से इंकार कर दिया। उन्हें इकट्ठा करने वाले अधिकारियों पर हमले किए गए। ताइवान में भी क्योमिंनटांग के शासन का विरोध हुआ।

सरकार ने इस सब का जवाब पाशिवक शक्ति के इस्तेमाल के रूप में दिया। कवि वेन-ई-टयो की, जो कि प्रजातंत्र के संघर्ष से जुड़े थे, हत्या कर दी गई। मई 1947 में हड़तालों और प्रदर्शनों पर प्रतिबंध लगाए गए। यहाँ तक कि दस से अधिक व्यक्तियों को एक साथ अर्जी देने का भी अधिकार नहीं था। इस प्रकार शांतिपूर्वक विरोध करने के रास्ते भी बंद कर दिए गए। जो लोग क्योमिंनटांग और साम्यवादियों के मध्य खड़े थे उनके लिए क्योमिंनटांग की दमनकारी नीति को देखते हुए अब साम्यवादियों के साथ जाने के कोई दूसरा रास्ता नहीं था।

क्योंकि "मुक्त क्षेत्रों" में साम्यवादियों को किसानों का समर्थन प्राप्त था, इसलिए वे क्योमिंनटांग के दमन से बचे रहे। इन क्षेत्रों में साम्यवादी दल ने अपनी स्थिति अक्तूबर 1947 के कृषि सुधार कानून के द्वारा और मजबूत की। इसके द्वारा जमींदारों की भूमि जब्त कर ली गई। धनी किसानों को एक निर्धारित सीमा से ज्यादा भूमि दे देनी पड़ी। वास्तव में इस कानून का उद्देश्य जमींदारों के वर्ग को समाप्त करना था न कि व्यक्तिगत रूप से उनकी हत्या करना। जमींदारों और धनी किसानों, बड़े जमींदारों और छोटे जमींदारों, साधारण जमींदारों और उत्पीड़न करने वाले जमींदारों के मध्य स्पष्ट भेद किया जाता था। प्रत्येक श्रेणी के साथ कृषि कानून के ढाँचे के आधार पर व्यवहार किया जाता था। परंतु इस कानून का आधारभूत सिद्धांत "भूमि जोतने वालों की" ही था।

ध्यान देने की बात यह है कि इन सुधारों को प्रशासनिक तौर पर ऊपर से नहीं लादा गया। कृषि परिवर्तन के आंदोलन की वास्तविक ताकत गरीब और मध्यम श्रेणी के किसान थे। भूमि का वितरण निम्न तरीके से किया जाता था:

समस्त सार्वजनिक भूमि और जमींदारों की भूमि पर स्थानीय किसान सभा कब्जा कर लेती थी। उसके बाद समस्त भूमि को प्रति व्यक्ति दर के हिसाब से बांटा जाता था। समस्त इलाके की जोतों के आकार को भी पुनः समायोजित किया जाता था। इसमें यह ध्यान रखा जाता था कि इलाके के प्रत्येक व्यक्ति को उत्पादकता या आकार के हिसाब से बराबर की जोत मिले।

एक साल के भीतर 100 लाख से अधिक किसानों को "मुक्त क्षेत्रों" में भूमि प्राप्त हो गई थी। साम्यवादी दल ने किसानों को स्वैच्छिक तौर पर सहकारिता आंदोलन में भी भाग लेने को प्रेरित किया। कृषि के तरीकों में सुधार और उत्पादकता में बढ़ोतरी लाने के लिए ऐसा किया गया।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि 1947 में जो विजय साम्यवादियों ने हासिल की, वह केवल सैनिक तरीकों से ही नहीं मिली थी। क्योमिंनटांग और मुक्त क्षेत्रों में जो अलग-अलग रूप वर्ग संघर्ष ने लिए उनसे जहाँ एक ओर क्योमिंनटांग की स्थिति कमजोर हुई तो दूसरी तरफ समस्त चीन में साम्यवादी दल की स्थिति सुदृढ़ हुई। भूमि मिलने के साथ किसान गृह युद्ध में उत्साहपूर्वक साम्यवादियों की ओर कूद पड़े। क्योमिंनटांग के सैनिकों की संख्या निरंतर गिर रही थी। युद्ध प्रारंभ होने के समय यह संख्या 4,300,000 थी जो कि जुलाई 1947 में 3,700,000 रह गई। उधर पीपुल्स लिबरेशन आर्मी जो पहले 1,200,000 थी अब लगभग 2,000;000 हो गई। युद्ध स्थिति में भी एक आधारभूत परिवर्तन आया था। पिछले 20 वर्षों से चीन में क्रांतिकारी सेना सुरक्षात्मक युद्ध ही लड़ती आई थी, परंतु अब पहली बार उसने आक्रामक स्थिति हासिल की थी। लिबरेशन आर्मी क्योमिंनटांग क्षेत्रों में दूर तक जा पहुंची माओ-त्सु-तुंग ने इस अवस्था को "युद्ध में बदलाव लाने वाला मोड़" बताया था।

35.6 साम्यवादी विजय (1948-49)

1948 की बसंत ऋतु तक साम्यवादियों ने पीली नदी के रास्ते में तकरीबन सभी शहरों में प्रवेश पा लिया था। येनान पर भी (जो कि जापान के विरूद्ध युद्ध में उनका प्रमुख अड्डा रहा था और 1946 में उसे उन्हें छोड़ना पड़ा था) पुनः अधिकार स्थापित कर लिया गया। आगे के तीन प्रमुख अभियानों में उन्होंने क्योमिंनटांग की सेनाओं को पूर्णतया पराजित किया:

- पहला मुख्य अभियान पूर्वी चीन में था। 16 सितम्बर, 1948 के दिन शानटुंग प्रांत की राजधानी रसीनान पर हमला किया गया। आठ दिन के संघर्ष के बाद उसे क्योमिंनटांग से स्वतंत्र करा लिया गया।
- 12 सितम्बर से 2 नवम्बर 1948 तक पीपुल्स आर्मी ने उत्तरपूर्व में जो अभियान चलाया उसके परिणामस्वरूप शैनयांग और समस्त उत्तर-पूर्वी चीन मुक्त करा लिया गया। यह एक महत्वपूर्ण इलाका था क्योंकि चीन के औद्योगिक नगर और सबसे उत्पादक क्षेत्र यहीं थे।
- 7 नवम्बर 1948 और 18 जनवरी 1949 के मध्य पीपुल्स आर्मी ने हुआई नदी के उत्तर का इलाका मुक्त करा लिया और उसके दक्षिण का भी बड़ा भाग अपने नियंत्रण में ले लिया।

5 दिसम्बर 1948 से 1जनवंरी 1949 के मध्य एक अन्य अभियान में पी.एल.ए. ने पीकिंग को भी मुक्त करा लिया । इस समय च्यांग काई शेक ने बातचीत का दिखावा किया परंतु वह अपनी सेनाओं के पुनर्गठित करने को वक्त चाहता था । साम्यवादियों को उसका यह खेल स्पष्ट हो गया । अतः अप्रैल 1949 में उन्होंने संपूर्ण देश को मुक्त कराने के लिए एक नया अभियान शुरू किया । लगभग 20 वर्ष से चले आ रहे क्योमिंनटांग के मुख्यालय नानकिंग को जीतने में सिर्फ तीन दिन लगे । नानकिंग के मुक्त होने का अर्थ था क्योमिंनटांग के शासन की समाप्ति जिसके बाद चीन की समस्त मुख्य भूमि साम्यवादियों के अधिकार में आ गई । अब च्यांग काई शेक अपने कुछ सैनिकों के साथ ताइवान भागने को बाध्य हुआ । चीन के पश्चिमी प्रांतों में शासन कर रहे स्वतंत्र युद्ध मामलों में अपने हथियार डाल दिए और साम्यवादी शासन को स्वीकार कर लिया । इस प्रकार साम्यवादियों की गृह युद्ध में विजय हुई । इस प्रकार चीन की जनता की पहली बार अपनी सरकार सारे देश में बनी ।

जैसा कि पहले भी होता आया था, क्योमिंनटांग द्वारा जन सहयोग खोना और साम्यवादियों को जन सहयोग प्राप्त होना इस निर्णायक विजय का महत्वपूर्ण कारण था । वास्तव में मूल्य वृद्धि को रोकने में क्योमिंनटांग की असमर्थता और उत्पादन का रुकना क्योमिंनटांग को जनता से दूर ले गये थे ।

उधर 1948-49 के मध्य साम्यवादियों ने एक लचीली कृषि नीति अपनाकर जनता के एक बड़े हिस्से का समर्थन प्राप्त करने का प्रयत्न किया था । प्रारंभ में एक उदार नीति अपनाई गई । उदाहरण के लिए धनी किसानों को इस समय नहीं छेड़ा गया और न ही कोई ऐसा कदम उठाया गया जो मध्यम वर्ग और बुर्जुवा वर्ग के हितों के विरूद्ध था । इस प्रकार ये वर्ग भी उनसे खफा नहीं हुए । इस समय प्रयत्न यह था कि समस्त प्रजातांत्रिक शक्तियों को एक साथ रखा जाए । इसमें कई गैर साम्यवादी और साम्यवादियों विरोधी अन्य गुट भी शामिल थे । इन सबके संयुक्त प्रयासों से राष्ट्र का पुनर्गठन किया जाना था । इस प्रकार की नीति को माओ ने अपने पर्चे ''ऑन द पीपुल्स डेमोक्रेटिक डिक्टेटरशिप'' के द्वारा सामने रखा था और ''मुक्त क्षेत्रों'' में इसे लागू कर दिया गया था ।

इस प्रकार विजय हासिल होने से पहले ही नए राज्य के ढाँचों के निर्माण की परिस्थिति बना दी गई थी । इसका आधार अन्य प्रजातांत्रिक गुटों के साथ गठबंधन कर एक ऐसे ''समान कार्यक्रम'' का अपनाया जाना था जो चीन की जनता की महत्वकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता था । 1 अक्तूबर 1949 के दिन चीन के जनवादी गणतंत्र की औपचारिक रूप से घोषणा कर दी गई ।

35.7 नई सत्ता की कठिनाइयाँ

नई सत्ता के लिए अभी भी कई परेशानियाँ थीं । विश्व की अन्य शक्तियां उसे मान्यता देने को तैयार नहीं थीं । अमरीका ताइवान में च्यांग काई शेक की सरकार को ही चीन की सरकार के रूप में मान्यता दिए हुए था । अन्य शक्तियों का रवैया हिचकिचाहटपूर्ण था—कुछ का मान्यता का दिखावा करना और कुछ का शांत रहना । साम्यवादी चीन को संयुक्त राष्ट्र में चीन की सीट नहीं दी गई । सोवियत रूस को छोड़कर, जो कि एक समाजवादी देश था, अन्य देशों का रवैया शत्रुतापूर्ण ही था । वास्तव में चीन की इस नई सत्ता में उन्हें साम्राज्यवादियों द्वारा समर्पित शक्तियों की हार और समाजवाद की विजय दिखाई पड़ी । और वे सैद्धांतिक तौर पर समाजवाद के विरोधी थे । प्रजातंत्र की बात अब वे भूल गए और इस तथ्य को भी अनदेखा कर दिया कि नई सत्ता को व्यापक जन समर्थन प्राप्त था । अमरीका ने तो वास्तव में अगले 20 वर्षों तक साम्यवादी चीन को मान्यता नहीं दी ।

नई सत्ता के सम्मुख अन्य समस्याएँ थीं:

- राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का पूर्णतया तहस नहस होना,
- तेजी से बढ़ रही मुद्रास्फीति,
- नष्ट-भ्रष्ट और बिगड़ी हुई संचार व्यवस्था,
- विदेशी व्यापार का न होना,
- ऐसे उद्योग जिनमें कोई उत्पादन नहीं हो रहा था, और
- कई क्षेत्रों में अकाल का खतरा ।

इसके अतिरिक्त चीन की आधुनिक भाप से चलने वाली नौकाओं और जहाजों में से कुछ भी नहीं बचा था। ये यांगसी नदी पर आवागमन और व्यापार के मुख्य साधन थे और विदेशी मिलकियत के अधीन थे।

इन सबकों देखते हुए कई प्रेक्षकों की यह धारणा थी कि साम्यवादी शासन अधिक समय तक नहीं चल पाएगा। लेकिन वे यह नहीं समझ पाए कि नई सत्ता के पक्ष में एक बहुत महत्वपूर्ण बात थी उसके पीछे चीन की जनता का समर्थन और सहयोग। चीन की जनता नई सत्ता को अपने देश के इतिहास और अपने व्यक्तिगत जीवन में एक नए सवेरे के रूप में देख रही थी। बहुत कम को यह मालूम था कि साम्यवाद क्या है परंतु सब इससे परिचित थे कि वे एक नवीन समाज का निर्माण कर रहे हैं। गरीब से गरीब व्यक्ति समाज को उसकी जरूरत और उसमें अपने नए स्थान को महसूस कर रहा था। अनेक वर्षों के बाद पहली बार सारा देश संगठित और शांतिपूर्ण था।

संचार व्यवस्था को तेजी से ठीक किया जा रहा था। कुछ आलोचकों ने यह आरोप लगाया कि इस कार्य में लगे मजदूरों को मजदूरी नहीं दी गई। परंतु वे यह भूल जाते हैं कि यह एक जन कार्य था और जनता ने मिल-जुलकर इस कार्य को संभाला था। उसके खान-पान की व्यवस्था पीपुल्स लिबरेशन आर्मी ने की और उनसे वही वर्ताव किया जाता था जैसा सैनिकों से। 1949 के जाड़े में शहरों में भोजन की कोई कमी नहीं हुई। यांगसी नदी के रास्ते से छोटी-छोटी नावों में खाद्य सामग्री 1400 मील ऊपर ले जाई गई। जिस प्रकार 1917 में सोवियत रूस ने विदेशी राज्यों द्वारा लगाई गई आर्थिक रूकावटों के बावजूद अपना अस्तित्व बनाए रखने में सफलता प्राप्त की थी, ठीक उसी प्रकार चीन की जनता ने भी की।

सेना को अब और कोई लड़ाई नहीं लड़नी थी। अतः सैनिकों को शहरों में टूटी हुई इमारतों के पुनर्निर्माण का कार्य सौंपा गया। एक नई मुद्रा लागू की गई। 1951 के मध्य तक, यानि कि विजय के दो वर्षों में ही, मुद्रास्फीति पर अंकुश लगा दिया गया और अर्थव्यवस्था में कुछ स्थायित्व आया।

इस नए स्थायित्व के आधार पर चीन के साम्यवादी दल ने अब अपने कियांगंसी और येनान के अनुभवों को सारे देश मे लागू करने का प्रयास किया।

बोध प्रश्न 2

1) क्योमिंनटांग की पराजय में सहयोगी कारकों की लगभग 10 पंक्तियों मे चर्चा कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) साम्यवादियों का सामाजिक आधार क्या था? 5 पंक्तियों में बताइए।

....

....

....

....

....

3) नई सत्ता को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा उनकी चर्चा 10 पंक्तियों में कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

35.8 राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक ढाँचा

1948 में माओ के सुझाव पर साम्यवादी दल द्वारा मई दिवस पर अपनाए गए नारों में यह घोषणा की गई थी कि:

> "समस्त प्रजातांत्रिक दल, जन संगठन और जन नेताओं को तुरंत एक राजनीतिक सलाह सम्मेलन बुलाना चाहिए जिसमें इस बात पर विचार किया जाए कि किस प्रकार एक जन सम्मेलन बुलाकर जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार बनाई जाए।"

इस प्रकार की सरकार की रूपरेखा का ब्यौरा माओ ने अपने निबंध "**ऑन द पीपुल्स डेमोक्रेटिक डिक्टेटरशिप**" में दिया था। इसमें जिस राजनीतिक ढांचे की बात माओ ने की थी उसमें देश के राजनीतिक आर्थिक जीवन में चीन की जनता के बहुत व्यापक भाग द्वारा हिस्सा लिए जाने की बात कही गई थी। वास्तव में जमींदारों और प्रतिक्रियावादियों की शक्ति को गिराने के लिए जनता की समस्त शक्ति को लगाया जाना था।

साम्यवादी विजय द्वारा चीन में गणतंत्र की घोषणा के साथ ही इस प्रकार की सरकार बनाई गई। इस गठबंधन में 14 दल या गुट शामिल थे। सरकार में और प्रांतों में उपराज्यपालों के रूप में अनेक गैर-साम्यवादी भी इसमें शामिल थे। यह राजनीतिक ढांचा इस बात का प्रतीक था कि नई सत्ता को व्यापक समर्थन प्राप्त है। सामाजिक गठबंधन की दृष्टि से यह एक प्रकार का संयुक्त मोर्चा था जिसमें मजदूर, किसान और बूर्जुवा वर्ग शामिल था। माओ को जनवादी गणतंत्र का चेयरमैन बनाया गया।

35.8.1 भूमि सुधार

सबसे पहले लागू की गई महत्वपूर्ण नीतियों में भूमि सुधार की नीति थी। इसमें दो बातें थीं:

- समस्त भूमि गाँव या जिला स्तर पर जहां तक हो सके बराबर रूप में बांटी जानी थी, और
- भूतपूर्व जमींदारों को एक छोटा हिस्सा ही दिया जाना था और वह भी तब जबकि वे स्वयं उस पर कार्य करने को तैयार हों।

नवीन राजनीतिक ढांचे के विस्तृत आधार को देखते हुए कृषि नीति भी उदार ही रखी गई थी जिससे कि गांवों में अधिकांश वर्गों का समर्थन बना रहे। इस दृष्टि से गृह युद्ध के दौरान अपनाई गई नीति से यह नीति अधिक उदार थी। वास्तव मे इसके द्वारा गांवों के आर्थिक विकास में तीव्रता लाने का प्रयास किया

गया था । साथ ही साथ सामाजिक और आर्थिक संबंधों को भी एक नया मोड़ दिया जाना था ।

1950 में जो कृषि कानून पारित किया गया उसमें 1947 के कानून की अपेक्षा गांवों में जमींदारों की जमीन और संपत्ति का विभाजन बिना किसी मुआवज़े के किया गया । परंतु इस बार उन्हें शहरों में अपनी संपत्ति और व्यापार बनाए रखने की छूट दे दी गई । इसी प्रकार 1947 की अपेक्षा धनी किसानों को उनकी जोत बरकरार रखने की छूट इसलिए दी गई कि उनकी उत्पादन क्षमता अधिक थी और शहरों में चावल पहुंचाया जाना था । लेकिन यहाँ यह ध्यान रखना आवश्यक है कि ये लचीले तरीके केवल नए मुक्त क्षेत्रों में ही लागू किए गए जहां पर कि पहली बार भूमि सुधार लागू किए जा रहे थे । पुराने मुक्त क्षेत्रों मे 1947 के तरीके (जिनकी चर्चा हम इकाई 4 में कर चुके हैं) लागू रहे ।

जमींदारों की संपत्ति गरीब और मध्यम श्रेणी के किसानों के बीच बांटी गई । भाड़े की खेती समाप्त कर दी गई । इसमें जमींदारों को नकदी में या फसल के हिस्से के तौर में लाभ मिलता था । इस सुधार का अर्थ यह था कि देश की कुल कृषि उपज का जो 1/4 भाग जो पहले जमींदारों की जेब में जाता था अब बन्द हो गया । बेगार और जमींदारों द्वारा ऐसे जाने वाले अन्य चढ़ावे भी खत्म कर दिए गए । इस सुधार से लगभग 300 लाख किसानों को लाभ हुआ । परंतु धनी किसान अपनी उत्तम उत्पादकता की जमीनें अपने पास रखने में सफल रहे । इस कानून ने किसान सभाओं (जो कि इन परिवर्तनों को लागू करने के लिए बनाई गई थीं) की शक्तियों की भी व्याख्या की । जहां मतभेद थे उनका फैसला करने के लिए जन अदालतें बनाई गईं ।

इस प्रकार जन आंदोलनों और किसान सभाओं की स्थापना ने जमींदारों की राजनीतिक शक्ति भी खत्म कर दी । इससे किसानों में अत्यधिक आत्मविश्वास आया । चीन के सभी क्षेत्रों में अत्याचारी जमींदारों पर जन मुकदमे चलाए गए । कई जमींदारों को उनके अपराध के अनुसार सजाएं सुनाई गईं । इसमें नजरबंध किए जाने से लेकर माफी मंगवाना तक शामिल था । कुछ जमींदारों के साथ क्रूर व्यवहार भी किया गया और यह काल जमींदारों के लिए मानसिक व राजनीतिक तनाव का काल रहा । परंतु यहां यह ध्यान रखना चाहिए कि जहाँ-जहाँ किसानों ने कानून अपने हाथ में लिया और जमींदारों को सबक सिखाया उन किसानों का एक लम्बी अवधि तक बर्बरता के साथ जमींदारों द्वारा शोषण किया गया था । परंतु जमींदारों से बदला कुछ ही घटनाओं में लिया गया और यह उस काल का सामान्य कानून नहीं था ।

कृषि सुधारों ने गांवों के सामाजिक जीवन में गतिशीलता लाने में भी सहयोग दिया । वहां किसान सभाओं के द्वारा साक्षरता और स्वास्थ्य अभियान चलाए गए । इसके अतिरिक्त लोगों के जीवन में परिवर्तन लाने के लिए स्त्री और युवा संगठनों ने भी प्रयास किए जिससे सभी इनमें हिस्सा ले सकें ।

35.8.2 उद्योग

उद्योग और उनका प्रबंध बूज़ुर्वा वर्ग के हाथों में था । साम्यवादियों का इसमें कोई दखल न था । अतः 1950 के कानून द्वारा उन्होंने इस क्षेत्र में अपनी गतिविधियों को श्रमिक संघ बनाने, मूल्य नियंत्रण, आवश्यक वस्तुओं के वितरण और राजकीय आदेशों को लागू करवाने तक सीमित रखा । साम्यवादी दल द्वारा अनेक उद्योगों, शहरों और प्रांतों में श्रमिक संगठन बनाए गए । ये संगठन श्रमिकों के हितों का प्रतिनिधित्व करने के साथ-साथ साक्षरता अभियान में भी कार्यरत थे । राज्य के निर्देशन में निजी अर्थव्यवस्था का विकास जारी रहा और व्यक्ति मुनाफा भी कमा सकते थे । भ्रष्टाचार, घूसखोरी और संसाधनों की बर्बादी, जैसी बुराइयों के विरूद्ध जो कि उत्पादन को प्रभावित करती थी व्यापक आंदोलन छेड़ा गया । यातायात के साधनों, व्यापार और वित्त व्यवस्था को भी ठीक किया गया ।

35.8.3 सामाजिक परिवर्तन

1950 के विवाह कानून ने सामाजिक संबंधों को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की । इसका उद्देश्य स्त्रियों को समान अधिकार दिलवाना था । शादी को एक ऐसे बंधन का दर्जा दिया गया जो परस्पर समानता और स्वतंत्र सहमति पर आधारित था । इससे [illegible] की स्थिति में व्यापक सुधार आया । स्त्रियां उत्पादन कार्य में सक्रिय भूमिका अदा कर सामाजिक [illegible] को संभालने लगीं । वास्तव में वे नए चीन की सक्रिय नागरिक बनीं । विवाह कानून में बच्चों की [illegible] व्यवस्था थी । छोटी बच्चियों की हत्या (Female

लगातार लोगों ने अपने बच्चे बेचे थे परंतु अब ऐसा करना अवैध घोषित कर दिया गया। कई स्त्रियों ने, जिनके विवाह उनकी मर्जी के खिलाफ हुए थे, तलाक प्राप्त करना चाहा और स्त्री संगठनों ने प्रत्येक रूप से इसमें उनकी मदद की। वैश्यावृत्ति को अपराध घोषित किया गया और वैश्याओं को एक नया जीवन प्रारंभ करने के लिए स्वास्थ्य सुविधायें और भावात्मक सहयोग दिया गया।

अफीम और अन्य नशीले पदार्थों का धंधा करने वालों से कड़ा व्यवहार किया गया। अफीमचियों के उपचार की व्यवस्था की गई और उन्हें नशे के दुष्प्रभावों से परिचित कराया गया। सार्वजनिक स्थानों पर जुआ खेलना वर्जित किया गया। वास्तव में समस्त अवैध गतिविधियों का सामना करते वक्त शासन ने मनुष्यों की मर्यादा के सिद्धांत की रक्षा की।

नई सत्ता के सम्मुख एक अन्य कठिनाई थी देश का सांस्कृतिक पिछड़ापन। माओ ने यह कहा था कि "किसानों को शिक्षित करना एक गहन समस्या है।" इससे निपटने के लिए व्यापक पैमाने पर गांवों में, कारखानों में और शहर की गरीब जनता के मध्य साक्षरता अभियान छेड़े गए। नतीजन 1949-1952 के मध्य तीन वर्षों में ही विद्यार्थियों की संख्या दुगुनी हो गई। उदाहरण के लिए प्राइमरी स्कूलों में यह 24 से 51 लाख और सैकेंडरी स्कूलों मे 1 से $2\frac{1}{2}$ लाख हो गई।

इन सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनों को लागू करने के लिए जो संगठनात्मक ताना बुना गया वह देश के पिछड़े से पिछड़े इलाकों तक पहुंचाया गया। गृह युद्ध के प्रारंभ के समय साम्यवादी दल की सदस्य संख्या लगभग12 लाख हो गई। इसी प्रकार दल से संबंधित जन संगठनों का भी समाज के प्रत्येक क्षेत्र में विस्तार हुआ। जैसे, श्रमिक संगठन, स्त्री संगठन, युवा दल, बुद्धिजीवियों के संगठन, सोवियत संघ और अन्य साम्यवादी देशों से मित्रता क्लब आदि। ये सभी संगठन काफी सक्रिय थे और समाज में अपने अपने क्षेत्रों की समस्याओं के प्रति जागरूक थे।

इन संगठनों ने निम्नलिखित कार्यों में सहयोग दिया:

- उस समय की महत्वपूर्ण नीतियों के साथ जनता को जोड़ना,
- जनता को सक्रिय बनाना, और
- नई विचारधारा और मूल्यों को सुदृढ़ करने के लिए जन सभाओं, विचार मंचों, जन यात्राओं, पोस्टर लगाना आदि के रूप में अभियान चलाना।

इस प्रकार एक ऐसे जनवादी शासन की सामाजिक, राजनीतिक व वैचारिक नींव रखी गई जिससे धीरे-धीरे समाजवादी समाज का निर्माण किया जा सके।

1952 में जन संगठन और सदस्यता	
जन संगठन	सदस्यता (लाख में)
स्त्री संगठन	760
डेमोक्रेटिक यूथ संगठन	70
फेडरेशन ऑफ स्टूडेंट्स	16
श्रमिक संघ	60

35.9 चीन की क्रांति की महत्ता

चीन की सफल क्रांति की महत्ता और विश्वव्यापी प्रभाव को आंकने के लिए हमें उसे एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में रखकर देखना होगा। जनसंख्या और क्षेत्र, दोनों ही दृष्टि से चीन 1949 में विश्व का सबसे बड़ा राष्ट्र था। उसका क्षेत्रफल 9 लाख वर्ग किलोमीटर तक और 1939 के आँकड़ों के अनुसार जनसंख्या 41 करोड़ थी। इस प्रकार चीन की सफल क्रांति और जनवादी गणतंत्र की स्थापना के द्वारा विश्व की एक बड़ी जनसंख्या के जीवन में बदलाव आया। अतः यह घटना केवल चीन ही नहीं वरन् समस्त मानव जाति के इतिहास के लिए महत्वपूर्ण थी।

सामान्यतः इतिहासकारों की यह धारणा रही है कि आधुनिक विचारों का उद्‌भव पाश्चात्य जगत में हुआ और इन्होंने पिछड़े समाजों की जनता के चिन्तन को बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन विचारों में स्वतंत्रता, समानता, भातृत्व, प्रजातंत्र और लोकप्रिय संप्रभुता आते हैं। यहां यह समझना आवश्यक है कि ये विचार हवा में ही लागू नहीं हो सकते। वास्तव में पिछड़े समाजों में हो रहे बदलाव ही एक ऐसा वातावरण तैयार करते हैं जिनमें नवीन विचार जड़ पकड़ सकें । चीन में भी यही हुआ। इसके अतिरिक्त रूस (1917) और चीन (1949) की सफल क्रांतियों ने यह साबित कर दिया कि प्रजातंत्र और समानता तभी वास्तविक रूप ले सकते हैं जबकिः

- आर्थिक समता हो,
- भूख से मुक्ति हो, और
- उत्पादन का संगठन इस प्रकार किया जाए कि वह विश्व के उत्पाद और संपत्ति का उत्पादन करने वालों के हित में हो।

इसी प्रकार प्रजातंत्र एक राजनीतिक ढांचे के रूप में तभी वास्तविक हो सकता है, जबकिः

- उसमें मेहनतकश गरीबों (जो कि जनसंख्या का बड़ा भाग है) की सुनवाई हो,
- उसकी नीतियां गरीब जनता के हित में हों, और
- सरकार को चलाने में गरीब जनता की भागीदारी हो।

1949 की क्रांति ने चीन में एक इसी प्रकार के समाज और राजनीति की नींव रखी। ऐसा करके उसने अविकसित देशों की जनता को ही नहीं वरन् पाश्चात्य जगत के उन तबकों को भी प्रेरित किया जो सामाजिक न्याय व समता के लिए संघर्षरत थे। चीन की क्रांति ने यह साबित कर दिया कि प्रगतिशील विचार और तौर-तरीके केवल पाश्चात्य जगत में ही जन्म नहीं लेते।

हमें यह भी याद रखना चाहिए कि चीन की क्रांति उपनिवेशवाद को समाप्त करने के रास्ते में एक महान कदम था। क्रांति से पूर्व चीन का प्रायः विश्व की सभी साम्राज्यवादी ताकतों ने शोषण किया था। वहां की समस्त संपत्ति और उत्पादन का गठन इन ताकतों के लाभ के लिए ही किया जाता था। पाश्चात्य शक्तियों और जापान द्वारा लादी गई असमान संधियों के अधीन चीन की जनता एक अभावपूर्ण जीवन व्यतीत कर रही थी। इसके साथ-साथ जनता सामंतवाद और युद्ध सामन्तवाद की भी भयंकर रूप से शिकार थी। गरीब किसान भूख और गरीबी के कारण मरते रहते थे। परंतु चीन की क्रांति ने न केवल सामंतवाद का ही अंत किया वरन् चीन की धरती पर साम्राज्यवादियों के सामाजिक आधार को भी नष्ट कर दिया। चीन की जनता ने साम्राज्यवाद के विरूद्ध एक गैर-समझौतावादी संघर्ष छेड़कर पाश्चात्य शक्तियों के मुंह पर तमाचा मारा। परिणामस्वरूप राजनीतिक संतुलन का झुकाव समाजवाद और राष्ट्रीय स्वतंत्रता की ओर हुआ। इससे राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए लड़ रहे अन्य एशियाई देशों की जनता को भी प्रेरणा मिली।

चीन की क्रांति ने किसानों के राजनीतिक सामर्थ्य को दर्शाकर पिछड़े समाजों में क्रांतिकारी बदलाव में किसानों की भूमिका की एक रूपरेखा भी प्रस्तुत की। पिछड़े देशों में साम्यवादी आंदोलन ने चीन के इस अनुभव से लाभ उठाया। प्रायः सभी एशियाई देशों के साम्यवादी दलों ने चीन की जनवादी प्रजातांत्रिक क्रांति के सिद्धांत को अपने कार्यक्रम में शामिल किया। वास्तव में चीन की क्रांति ने वहाँ की जनता के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और बौद्धिक जीवन में बदलाव लाकर विश्व स्तर पर उन्हें एक प्रमुख भूमिका अदा करने का अवसर दिया।

बोध प्रश्न 3

1) नए शासन द्वारा जो भूमि सुधार लागू किए गए उनके मुख्य पहलुओं की चर्चा लगभग 15 पंक्तियों में कीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) लगभग 10 पंक्तियों में चीन की क्रांति की महत्ता बताइए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

35.10 सारांश

द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति पर चीन में गृह युद्ध छिड़ गया। अमरीका की सहायता से च्यांग काई शेक के नेतृत्व में क्योमिंनटांग ने साम्यवादियों पर आक्रमण किये परंतु साम्यवादियों को चीन की जनता से व्यापक सहयोग मिला। इसका कारण यह था कि उन्होंने जनहित की नीतियां अपनाई थीं और सामंतवाद और पूंजीवाद द्वारा किए जा रहे शोषण का विरोध किया। गृह युद्ध में साम्यवादियों की विजय हुई। यद्यपि क्योमिंनटांग के पास व्यापक साधन थे परंतु प्रतिक्रियावादी नीतियों के कारण वह जनता में अपना समर्थन न बना पाया।

साम्यवादियों ने एक नवीन शासन की स्थापना की जिसे प्रारंभ में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। परंतु व्यापक भूमि सुधार और अपने सदस्यों के संगठित प्रयासों के द्वारा साम्यवादी धीरे-धीरे इन कठिनाइयों को दूर करने में सफल रहे। चीन की क्रांति का विश्वव्यापी प्रभाव पड़ा। उसकी महत्ता को अनेक देशों में संघर्ष कर रही जनता ने एक आदर्श के रूप में स्वीकार किया।

35.11 शब्दावली

राष्ट्रीय सरकारः यहाँ इसका प्रयोग क्योमिंनटांग और साम्यवादी दल में अंतर दर्शाने के लिए किया गया है। क्योमिंनटांग राष्ट्रवाद का दावा करता था जबकि साम्यवादी दल की आस्था साम्यवादी क्रांति में थी।

मुक्त क्षेत्रः वे क्षेत्र जिन पर साम्यवादियों ने अपना प्रभाव स्थापित कर लिया था, उनके द्वारा मुक्त क्षेत्र कहे जाते थे।

35.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) अपने उत्तर के लिए भाग 35.3 देखें।
2) i) × ii) × iii) ✓ iv) ✓

बोध प्रश्न 2

1) भाग 35.5 देखकर अपना उत्तर लिखें।
2) किसान, मजदूर, कारीगर आदि। देखें भाग 35.4
3) भाग 35.7 देखें।

बोध प्रश्न 3

1) अपना उत्तर उपभाग 38.8.1 पर आधारित करें।
2) अपना उत्तर भाग 38.9 पर आधारित करें।

चित्र
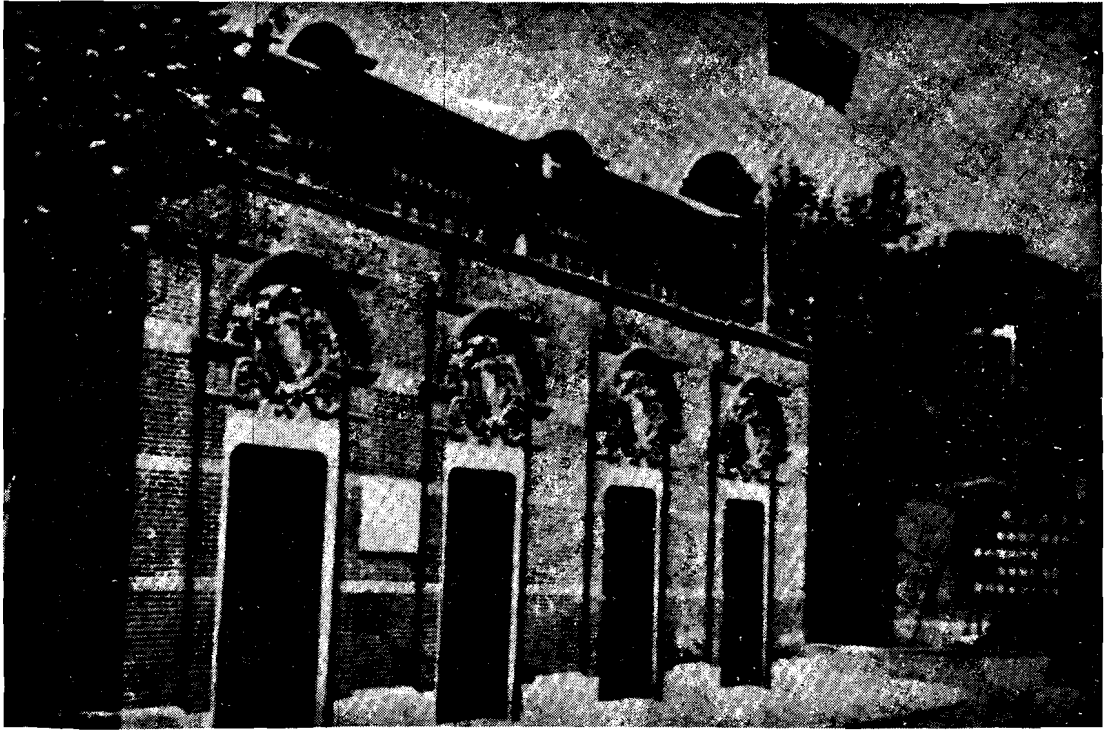
1 वह इमारत जहाँ शंघाई में साम्यवादी दल की पहली बैठक हुई। (जुलाई 1921)

ली-ता-चाओ

3 चेन-तू-शू

4 युवा अवस्था में माओ
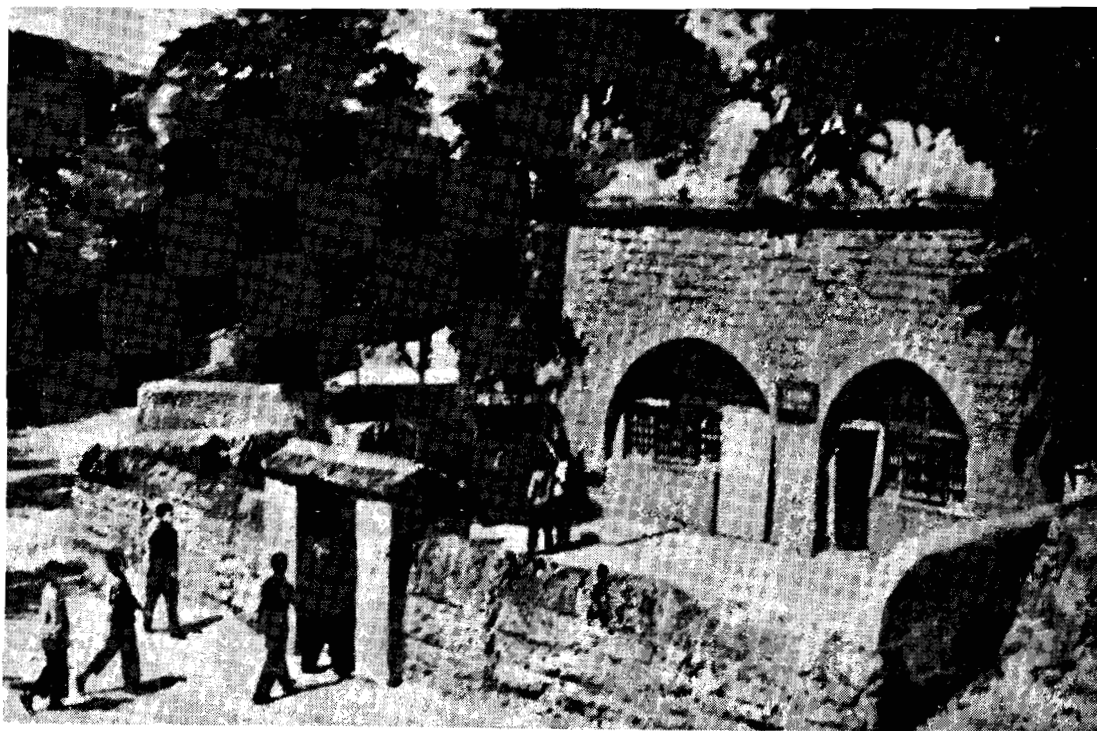
5 येनान में माओ के निवास की गुफा

6 जापानी सेना के विरूद्ध लाल सेना के समर्थक लट्ठों में बारुद भरकर ले जाते हुए (1938)

7 माओ द्वारा चीन में जनवादी गणतंत्र की स्थापना की घोषणा (1 अक्तूबर, 1949)

8 लिन-पियो

9 चाओ-एन-लाई

CHINA
साम्यवादियों का महान अभियान (Long March)
1934-1935
Route of communist forces from Juichin
Route of communist forces from other areas
Communist areas, 1934-1936
U.S.S.R.
MANCHUKUO (MANCHUKIA)
OUTER
MONGOLIA
JEHOL
Mukden
INNER
MONGOLIA
Kalgan
Peking
Tienstin
K A N S U
Taiyuan
SHANSI
Tsinan
Isinglad
TSINGHAI
Lanchow
honan
SHANSHI
Sian
R. Yellow
Nanking
SZECHWAN
R. Yangtzo
Hankow
SIKANG
Chengtu
Ichang
Chungking
Nancharg
Changsha
Tuny
HUNAN
KWANGSI
KWEICHOW
FUKIEN
Iuichin
R. Mekong
Kweiyang
TAIWAN
Kweilin
Amoy
Kunming
YUNNAN
KWANGSI
Carton
Swatoco
KWANGTUNG
B U R M A
Hong Kong (Br.)
Macao (Port)
FRENCH
INDOCHINA
HAINAN
SIAM

मानचित्र-1

1937-45 के मध्य जापान द्वारा चीन में अधिकार किए गए क्षेत्र
U.S.S.R.
MANCHUKUO
(1931-1932)
OUTER
MONGOLIA
HOL
Mukden
MONGOLIA
INNER
Peking July 1937
KOREA
K
A
N
S
U
Tatung
Sep 1937
HOPEH
Talyuan
Nov. 1937
SHANTUNG
Tsinan
Dec. 1937
Tsingtao
Jan. 1938
TSINGHAI
Yenan
SHANSI
Lanchow
SHENSI
Chengchow
May 1935
Slan
RIANGSU
Nanking
Dec. 1937
HONAN
SZECHWAN
Yangtze
ANHWEI
Shanghai
Nov. 1937
HUPEH
SIKANG
Chengtu
Ichung
May 1940
Hankow
Oct 1938
CHEKIANG
Chungleing
Changsha
Manchang
Aug. 1942
Wenchow
July 1942
KWEICHOW
HUNAN KIANGSI
FUKIEN
Kweiyung
Jan. 1945
TAIWAN
(FORMOSA)
Kunming
Amony
May 1938
KWANGTUNG
YUNAN
Canton
Oct. 1938
Swatow
June 1939
KWANGS
Hong Kong (Br)
Dec. 1941
Macao (Port)
FRENCH
INDOCHINA
Feb 1938
THAILAND

मानचित्र-2